International Journal of Applied Research 2017; 3(3): 915-917

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(3): 915-917
www.allresearchjournal.com
Received: 22-01-2017
Accepted: 23-02-2017

डॉ0 सौरभ वर्मा
उपाधि पी जी महाविद्यालय पीलीभीत
उत्तर प्रदेश भारत

Correspondence
डॉ0 सौरभ वर्मा
उपाधि पी जी महाविद्यालय पीलीभीत
उत्तर प्रदेश भारत

बरेली महानगर की मलिन बस्तियों के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन

डॉ0 सौरभ वर्मा

प्रस्तावना

प्रेत्यक सभ्यता के शहरी विकास में मलिन बस्तियां हमेशा से एक समस्या का विषय रही हैं, जहां का सामाजिक जीवन सामान्य धारा से अलग होता है। किसी भी मलिन बस्ती का शैक्षिक, आवासीय, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मनोविज्ञान वहां के शहरी विकास के समानुपाती न होकर विलोमानुपाती होता है। यदि शहर अत्यधिक विकसित है तो वहां पाई जाने वाली मलिन बस्तियों की संख्या निश्चित रूप से अधिक और मलिन बस्तियों के निवासी जनसंख्या कम से कम उपलब्ध साधनों में अपने दैनिक जीवन को निर्वाह करने वाली होती है।

किसी भी क्षेत्र विशेष के शैक्षिक स्तर का निर्माण वहां पर स्थित विद्यालयों के द्वारा होता है, जिनके द्वारा उस क्षेत्र के निवासियों के रीति–रिवाजों, अनुशासन, सभ्यता का निर्माण और उनका एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरण इन्हीं विद्यालयों की शिक्षण नीति पर आधारित होता है। यह माना जाता है कि विद्यालय द्वारा दी गई शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति विशेष द्वारा अपने समाज और परिवार में सामाजिक और नैतिक मूल्य विकसित किए जाते हैं। इनकी अनुपस्थिति एवं शैक्षिक अवसाद की स्थिति में वहां के सामाजिक समूह अपने मानसिक स्तर को विकसित न कर पाने के कारण शैक्षिक रूप से पिछड़ जाते हैं। बरेली महानगर औद्योगिक नगर न होकर वर्तमान में एक हस्तशिल्प एवं कृषि प्रधान शहर है जहां की 85 मलिन बस्तियों की वर्तमान शैक्षिक स्थिति वहां पर निवास करने वाली अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जातियों के साथ–साथ अल्पसंख्यक जातियों– विशेष रूप से मुस्लिम, संतोषप्रद प्रतीत नहीं होती है क्योंकि 85 मलिन बस्तियों में प्राथमिक शिक्षा के उन्नयन का विशेष रूप से प्रयास नहीं किया गया है जिसका मुख्य उदाहरण यह है कि 85 मलिन बस्तियों में केवल 69 प्राथमिक विद्यालय एवं 16 उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं, जो कि बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित हैं और इन विद्यालयों में छात्र–शिक्षक का प्रतिशत सामान्य से कहीं अधिक है। कहा जा सकता है कि शिक्षक–शिक्षिकाओं की नियुक्ति एवं स्थानान्तरण महानगर में ही किया गया है जबकि वहां पर छात्र–छात्राओं की संख्या सामान्य से निम्न है।

महानगर की मलिन बस्तियों में निरक्षर स्त्री व पुरुषों के साथ–साथ अर्द्धसाक्षर जनसंख्या का अधिक होना भी एक कारक है, जिसमें बस्ती के शैक्षिक वातावरण पर सीधे–सीधे प्रभाव पड़ता है। शैक्षिक वातावरण के स्तर को ऊँचा न उठने देने में निरक्षर व अर्द्धसाक्षर प्रौढ़ स्त्री–पुरुष अपने अर्द्ध संगठित कार्यक्षेत्र में अकुशल एवं असामायिक कार्य अवधि के कारण अपने शैक्षिक वातावरण को उन्नतशील नहीं बना पाते, साथ ही बचे हुए समय का सदुपयोग नशे व अन्य सामाजिक कुरीतियों में गुजारने को प्रधानता देते हैं। इसी के साथ मलिन बस्ती में संचालित साक्षरता केन्द्रों का अबाध गति से संचालित न होना भी एक कारक है।

बरेली महानगर की मलिन बस्तियों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति पुरुषों के अनुपात में समानुपाती नहीं है क्योंकि गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों में महिलाएं पारिवारिक दायित्व के साथ–साथ दैनिक जीविकोपार्जन के कार्यों में अपना योगदान देती हैं जिससे कि उनके स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं मातृत्व में आने वाली कठिनाईयों के कारण वे सामान्य रूप से किसी न किसी रोग से पीड़ित रहती हैं और उनकी मृत्यु दर पुरुषों की अपेक्षा अधिक रहती है। "यू0 एन0–हैविटैट" की वर्तमान रिपोर्ट के अनुसार भारतवर्ष की मलिन बस्तियों में महिलाओं के साथ–साथ परिवार के बच्चों, विधवाओं एवं अविवाहित लड़कियों का स्वास्थ्य संतोषप्रद नहीं पाया जाता है। मलिन बस्तियों में निवास करने वाले 15–44 वर्ष तक की आयु की महिलाओं में सामान्यतः कोई न कोई विशेष बीमारी रहती ही है।

बरेली महानगर की मलिन बस्तियों में दैनिक जीविकोपार्जन के लिए महिलाओं के योगदान का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि मुख्यतया 62 प्रतिशत महिलाएं पास के घरों में चौका–बर्तन एवं झाड़ू लगाने का कार्य करती हैं तथा अकुशल मजदूरी का कार्य 26 प्रतिशत व अर्द्धकुशल मजदूरी का कार्य 4 प्रतिशत महिलाएं करती हैं। जबकि वे महिलाएं जो अपने पारिवारिक कार्यों में ही लगी रहती हैं और घर से बाहर जीविकोपार्जन के कार्यों के लिए नहीं जाती हैं, वे केवल 8 प्रतिशत ही हैं।

क्र.सं.	कार्य का प्रकार	प्रतिशत
1.	घरेलू कार्य	62.00
2.	अकुशल मजदूरी का कार्य	26.00
3.	अर्द्धकुशल मजदूरी का कार्य	04.00
4.	घरेलू महिलाएं	08.00

मलिन बस्तियों में महिलाओं की वैवाहिक स्थिति का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि परिवारों में सामान्य रूप से 18 वर्ष तक की किशोरियों का विवाह कर दिया जाता है जो कि 53 प्रतिशत है जबकि 38 प्रतिशत वे विवाहित नव युवा महिलाएं हैं जिनकी उम्र 18 से 20 वर्ष के मध्य है। गरीबी अथवा अन्य कारणों से अविवाहित महिलाएं जिनका विवाह 21 या उससे अधिक आयु में होता है, वे महिलाएं केवल 9 प्रतिशत हैं।

आर्थिक स्थिति का अध्ययन

बरेली महानगर के मलिन बस्ती निवासी अपने सीमित संसाधनों के कारण अपने ग्रामीण क्षेत्र के संबंधियों से आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं क्योंकि जब वे ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र में अपनी आजीविका चलाने एवं जीवन यापन के लिए आए तो शहरी क्षेत्र में प्रति व्यक्ति आय उनके ग्रामीण क्षेत्र के प्रति व्यक्ति आय से कहीं अधिक थी जिसमें उनकी अकुशल एवं अर्द्धकुशल कार्य क्षमता के चलते यह मलिन बस्ती निवासी अपने आपको समाज की मुख्य धारा से जोड़कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने में असफल रहे। "यू0 एन0–हैविटैट" की वर्तमान रिपोर्ट के अनुसार भारत ही नहीं बल्कि संसार के अन्य देशों में जैसे– बंगला देश, इथोपिया, हयाती के साथ–साथ अफ्रीका के अन्य देशों की मलिन बस्तियों के निवासी आज भी समाज की मुख्य धारा से इसलिए नहीं जुड़ पाए कि सीमित संसाधनों के मध्य उनकी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक आर्थिक विकास दर मुख्य धारा की निम्न श्रेणी के समान नहीं हो पाई। आज मलिन बस्ती निवासियों की गरीबी का मुख्य कारण उनका निम्न स्तरीय आर्थिक स्तर होने के साथ–साथ अन्य कारक भी हैं, जैसे–

1. अनुपयुक्त दैनिक आय के साथ–साथ खाद्य, सुरक्षा, दूषित जल और कर्ज में दबे रहने के कारण उनकी आर्थिक विकास दर नहीं बढ़ती है।
2. अकुशलता एवं कार्य की दक्षता में कमी होने के कारण उनके परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य नहीं हो पाती।
3. मलिन बस्ती में अत्यधिक जनसंख्या एवं अधिक से अधिक परिवारों की संख्या होने के कारण उनमें सांस्कृतिक असुरक्षा की भावना के चलते हुए वे अपने आर्थिक स्तर को सुधार नहीं पाते।
4. मलिन बस्तियों में स्वच्छ जल, दैनिक क्रियाओं का अभाव, अस्वथ्य वातावरण और शैक्षिक स्तर का न होना भी उनके आर्थिक विकास को प्रभावित करता है।
5. मलिन बस्ती निवासियों की गरीबी का मुख्य कारण यह भी है कि उनको सामाजिक सुरक्षा समाज के अन्य वर्गों के द्वारा नहीं प्राप्त होती।
6. निम्न आर्थिक स्थिति होने के कारण मलिन बस्ती निवासी अपने परिवार की ओर ध्यान नहीं दे पाते जिससे कि सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक अधिकारों को वे समय से प्राप्त नहीं कर पाते और सामाजिक कुरीतियों के शिकार होते हैं।
7. मलिन बस्ती निवासियों में सामाजिक एवं राजनैतिक पकड़ का अभाव होता है जिसके कारण वे आर्थिक उन्नति नहीं कर पाते हैं।
8. विश्व बैंक की 2007 की रिपोर्ट के अनुसार विश्व की कुल ग्रामीण जनसंख्या शहरी जनसंख्या से पहली बार कम हुई जिसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का पलायन रहा। रिपोर्ट में दर्शाया गया कि विकासशील देशों के आर्थिक स्तर में मन्दी के कारण रोजगार की तलाश और अपनी फसल का उचित मूल्य न मिलने के कारण ग्रामीण शहरों की ओर पलायन कर गए।

अमर्त्यसेन (2001), द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि विकासशील देशों में आर्थिक रूप से मध्यम वर्गीय परिवार सामान्यतः अपने जीविकोपार्जन में ही लिप्त रहते हैं, जिनके कारण वे देश की आर्थिक विकास दर की मुख्य धारा से जुड़ नहीं पाते क्योंकि वे अर्द्धकुशल अथवा अकुशल कारीगर के रूप में कार्य करते हैं और अपने आर्थिक स्तर को सुधारने के लिए प्रयासरत नहीं होते। इनके परिवारों में गरीबी के स्तर को देखते हुए उनके परिवारों की महिलाएं असामाजिक कार्यकलापों एवं देह व्यापार में सामान्य रूप से लिप्त हो जाती हैं जिसके कारण इनमें एच0आई0वी0पॉजिटिव/एड्स जैसी महामारी सामान्यतः पाई जाती हैं। इसका स्पष्ट उदाहरण कोलंबिया, एल्सल्वाडोर, फिलीपीन्स, इण्डोनेशिया, म्यानमांर और श्रीलंका जैसे देश हैं।

मलिन बस्तियों में सामाजिक स्थिति का अध्ययन

मलिन बस्ती के निवासी सामान्यतः वे परिवार होते हैं जो कि अपनी रोजी–रोटी की तलाश में ग्रामीण अंचल में अपने परिवारों से अलग होकर शहरों की ओर पलायन करते हैं और अपने उपलब्ध सीमित संसाधनों में अपने परिवार का जीवन–यापन करने हेतु दैनिक वेतन पर रोजगार की तलाश करते हैं। इस प्रकार इन परिवारों की मानसिकता मुख्य रूप से परिवार के मुखिया के साथ–साथ परिवार की महिलाएं एवं बच्चों की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करना ही होता है जिसमें कि उनका सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विकास अपना सामंजस्य बैठाने में कहीं पीछे छूट जाता है। कुपोषण, गन्दी आदतें, आपसी झगड़े, अपराध बोध यह सभी इन परिवारों के सर्व विकास के मध्य रोड़ा बनते हैं जिससे कि समाज का उच्च वर्ग इन परिवारों की युवा व महिला शक्ति को अपने निहित स्वार्थों हेतु प्रयोग में लाता है चाहें वह उच्च वर्गीय परिवारों एवं असंगठित व्यवसाय में काम करने वाले बंधुआ मजदूर, राजनैतिक नेताओं में आपराधिक प्रवृत्ति के लोग अथवा असामाजिक तत्वों के मध्य वेश्यावृत्ति, जुआ का अड्डा, सट्टा संचालित करने वाले लोगों का समूह। इस शोध अध्ययन के अंतर्गत बरेली महानगर की मलिन बस्तियों के परिवारों की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक स्थिति का विश्लेषण निम्न बिन्दुओं पर करने का प्रयास किया गया है।

6.1 परिवार के आयु संगठन का अध्ययन

मलिन बस्तियों के परिवारों के आयु संगठन का अध्ययन करने के उपरान्त ज्ञात हुआ कि एक वर्ष से कम शिशुओं की जनसंख्या का प्रतिशत सामान्य वर्ग से अधिक 21 प्रतिशत के साथ–साथ शिशु अवस्था के 2–10 वर्ष के बच्चों का प्रतिशत 18 है। गर्भवती महिलाओं के कुपोषण, प्रसव अव्यवस्थाओं व शिशुओं के अव्यवस्थित–असंतुलित आहार के कारण मृत्यु दर अधिक होने पर भी यह प्रतिशत रहता है जिसके कारण 11–20 वर्ष तक के किशोरों का प्रतिशत केवल 9 प्रतिशत ही रहा। परंतु इसके उपरान्त 21–30 वर्ष के नव युवा, जो कि अपने दैनिक जीविकोपार्जन में लगे रहते हैं और स्वयं अपनी आवश्यकताओं पर व्यय करने में सक्षम हो जाते हैं, वे 19 प्रतिशत पाए गए। नव

युवाओं में शादी कर अपने स्वयं के परिवारों को बढ़ाने के आयु वर्ग 31–50 वर्ष के सदस्य 24 प्रतिशत रहे जो कि स्वयं को अलग से अपने आप को प्रतिष्ठित करने के लिए संघर्षशील रहते हैं। सबसे आश्चर्यजनक तथ्य यह ज्ञात हुआ कि मलिन बस्तियों में 50 वर्ष से अधिक के पारिवारिक मुखियों का प्रतिशत अत्यधिक कम है जो कि केवल 9 प्रतिशत ही है। सर्वेक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि मलिन बस्ती के परिवारों में अव्यवस्थाओं, असंतुलित आहार, सीमित चिकित्सा व्यवस्थाएं, दूषित वातावरण, गन्दी आदतों के चलते हुए इनकी औसत आयु दर 50 वर्ष ही है।

क्र.सं.	परिवार के आयु संगठन का विवरण	प्रतिशत
1	01 वर्ष से कम	21.00
2	02–10 वर्ष	18.00
3	11–20 वर्ष	09.00
4	21–30 वर्ष	19.00
5	31–50 वर्ष	24.00
6	50 वर्ष से अधिक	09.00

मलिन बस्ती निवासी सामान्य रूप से अपनी दैनिक क्रियाओं में जीविकोपार्जन हेतु लगे रहते हैं और आर्थिक असुरक्षा की मानसिकता होने के कारण वे अपने शैक्षिक विकास के साथ सामाजिक विकास के दैनिक कार्यकलापों में पूर्ण रूप से प्रतिभाग नहीं कर पाते हैं और यदि कभी–कभी सामाजिक विकास के लिए प्रयास करते भी हैं तो उनका सीमित ज्ञान एवं सामाजिक उपेक्षा उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के मध्य आती है, इसी के साथ सर्वेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ कि वर्तमान राजनैतिक वातावरण के चलते हुए उनके सामाजिक विकास में स्थानीय राजनैतिक दलों के नेताओं के द्वारा उनका प्रयोग किया जाना भी एक कारक है जिसके कारण मलिन बस्तियों के निवासियों के मस्तिष्क में जातिगत सीमीकरण अधिक तेजी से विकसित हुए हैं जिसमें अनुसूचित जाति व पिछड़ा वर्ग के मलिन बस्तियों के परिवार अपने आपको समाज की मुख्य धारा से अलग समझते हुए अपने सामाजिक विकास का प्रयास करते नजर आते हैं।

संदर्भ:

1. सेन, अमर्त्य (1999) स्वतंत्रता के रूप में विकास (1 एड।) न्यू योर्क, ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस। आईएसबीएन 9780198297581
2. सेन, अमर्त्य (2001) स्वतंत्रता के रूप में विकास (2 एड।) ऑक्सफोर्ड न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस आईएसबीएन 97801 9 2893307
3. टुंगडडेन, बर्ट (2001) स्वतंत्रता के रूप में विकास का एक संतुलित दृष्टिकोण बर्गन, नॉर्वे: क्रो माइकलसेन संस्थान (कार्यशील पेपर श्रृंखला) आईएसबीएन 8290584997.
4. सैंडब्रुक, रिचर्ड (दिसंबर 2000) "वैश्वीकरण और नवउदार विकास सिद्धांत की सीमा" तीसरा विश्व तिमाही टेलर और फ्रांसिस 21(6):1071-1080